हज़रत इमाम हसन अस्करी (अ०) की शहादत

तौहीद प्रकाशन व्यवस्था

हम ये अर्ज़ नहीं करना चाहते कि अगर हमारे अइम्मः-ए-मासूमीन (अ०) को मौज़ू व मुनासिब माहौल में हकूमते इलाहिया की सरबराही का मौका मिले तो वह हज़रात इससे इंकार फर्माते जब हज़रत अमीरुल मोमिनीन (अ०) को हौज़ः-ए-इस्लामिया की ज़िआमत का मौक़ा काबिले कुबूल हालत में मिला तो हज़रत ने इस बार को अपने दोश पर लिया। ये नुक्तः खास तौर से पेशे नज़र रखने की ज़रूरत है कि बिसाते हुकूमत पर बहर तौर जमे रहने की तमन्ना में हज़रत ने कहीं पर मुसालहत या मुरव्वत से काम नहीं लिया।

सिब्ते अकबर हज़रत इमाम हसने मुज्तबा की बैअत आम तौर से हुई तो आप ने खुदा दाद इमामत के साथ ज़ाहिरी खिलाफ़त की ज़िम्मेदारियाँ भी कुबूल फ़रमाई लेकिन जब ये मुलाहेज़ा फ़रमाया कि खुलूस रखने वाले दियानतदारों की जो तादाद है उसके सहारे हुकूमते इलाहिया का सर अंजाम मुम्किन नहीं तो सुल्ह फर्मा के ज़ाहिरी हुकूमत से दस्त बरदार ही नहीं हो गये बलकि दारुल खिलाफः कूफ़े का क़ियाम तर्क फ़र्मा के मदीनः-ए-नबवी को मुराजअत फ़रमाई और वहाँ अुलूमें अहले बैत की तालीम व तब्लीग़ के लिये दर्सगाह की बिना की। नाहक़ कोश इसमें भी मुजाहिम हुए बल्कि महल्लाती साजिश के जरीअे हज़रत की ज़िन्दगी का चराग़ ही ख़ामोश कर दिया।

हज़रत सय्यदुश शुहदा सिब्ते अवसत इमाम हुसैन को जब अपने मोअतमदसफ़ीर के पयाम से पता चला कि कूफ़े वालों की काबिले लिहाज़ तादाद बैअत पर आमादा है तो हज़रत ने वहां जाने का कस्द फ़रमाया लेकिन अस्ना-ए-सफर में नागवार इत्तिलाअें मिलना शुरूअ हुईं फिर इब्ने ज़ियाद का फिरस्तादा फ़ौजी दस्तः मुज़ाहिम हुआ तो हज़रत कूफ़े के सफ़र से बाज़ रहे।

इन हालात का मुशाहदा इस नतीजे पर पहुँचता है अगर किसी इमाम (अ०) को मौका मिलता तो दुनिया की तारीख़ रसूल (स०) और अमीरुल मोमिनीन के बाद एक बार फिर इस्लामी हुकूमत की शान देखती उमवीयों के इज़्मिहलाल और अब्बासियों के तुलूअ के दौर में हमारे पांचवे इमाम (अ०) को मौक़ः मिला तो हज़रत ने अह्ले बैत के मआरिफ़ का इहतिमाम फ़रमाया आपके फरज़न्द व जानशीन हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक (अ०) के दौर में ये दर्सगाह और वसीअ व बलन्द हुई हमारे सवादे आज़म चार इमामों में दो इस मक्तब-ए-फैज़ के परवर्दः हैं। उमवी अब्बासी चपकालिश के इस दौर में हज़रत सादिक (अ०) चाहते तो इलाही मोर्चाः अलग क़ायम करते लेकिन ऐसा कुछ भी नहीं हुआ कि इस्लामी हुकूमत के क़ियाम की जिद व जुहद् के लिये हालात साज़गार न थे।

लेकिन इन हज़रात की पूरी कोशिश सीरतो रूहानी इक़्तिदार वक्त की हुकूमतों के लिये बेहद खौफ़नाक चीज़ें थी हर चन्द अइम्मः-ए-मासूमीन नज़्म व नसक़े हुकूमत में कोई मुदाख़लत फ़रमाते थे लेकिन आम्मः-तुन-नास के कुलूब का इन हज़रात की तरफ़ मैलान हुकूमत के लिये सूहाने रूह व अन्देशः-ए-जाँ बना रहता था कभी झूटी दोस्ती के पर्दे में कभी खुल्ल्म-खुल्ला दुश्मनी इख़्तियार करके इन हज़रात के सायःदार शजरे हयात को काट डालना ही उनका महबूब मक़्सद था।

हज़रत इमाम हसन अस्करी (अ०) की ज़िन्दगी इल्मी कारनामों से भरी है लेकिन हज़रत की ज़ाते इस्मत पनाह से दो ऐसे कारनामें ज़हूर में आये कि जिसने अहले कलिमः में आपकी धाक जमादी बातिल परस्त इक़्तिदार को भला इसका तहम्मुल कहाँ। दूसरे वाक़िअे के बाद ताते ज़ब्त न रही और हुकूमत जान ले लेने पर उतर आई।

पहला वाकिअः ये है कि उस वक्त के अज़ीम फल्सफ़ी इस्हाक़ बिनकिन्दी को शयतान ने उंगली दिखायी। तो वो कुरआन पाक के मुतनाकिज़ात (परस्पर विरोधी बातों) की खोजबीन में लग गया और ऐसी आयतें जम्अ करने लगा जिन्हें वो ग़लत फहमी से एक दूसरे के ख़िलाफ़ समझता था। उसने ''तनाकुज़ुल कुरआन नामी किताब लिखने का डौल डाला हज़रत को पता चला तो मुतफ़क्किर

हुए। हुस्ने इत्तिफाक़ से एक दिन किन्दी का एक शार्गिद हाज़िरे ख़िदमत हुआ इमाम (अ०) ने फ़रमाया कि कोई ऐसा नहीं है जो किन्दी को ये किताब लिखने से बाज़ रख सके मुलाकाती ने अर्ज़ की मौला हम शार्गिदों में लब कुशाई की मजाल कहाँ। हज़रत ने फरमाया जो मैं बताउँ क्या उस पर अमल कर सकते हो ? उसने अर्ज़ की जी हाँ ये तो हो सकता है इमाम ने फरमाया कि पहले उसकी ख़ूब खिदमत करके ख़ूसूसी तकर्रुब पैदा करो। जब वो तुमसे खुश हो जाये तब कहो मुझे एक इश्काल हो रहा है। आप इसे दफ्अ फ़रमा दें। जब उसकी इजाज़त दे दे तो कहो अगर कुरआन का मुतकल्लिम आपकी ख़िदमत में इसे लाये तो आप मुरादे मुतकल्लिम लाज़िमी तौर पर समझ लेगें ? आपका समझा हुआ मतलब और मुतकल्लिम की मुराद क़त्ई तौर पर एक होगी हस्हाक़ ने कहा नहीं ख़िलाफ भी हो सकता है तो शार्गिद ने कहा तब तनाकुज़ुल कुरआन लिखने से फ़ाएदा क्या हैं। किन्दी ने कहा ज़रा अपना इश्काल फिर दोहराओ शार्गिद ने फिर बयान किया किन्दी कुछ सोचने लगा और कहा तुम्हे क़सम है सचसच बताओ कि ये इअतिराज़ तुम्हें सिखाया किसने शार्गिद ने अर्ज़ की उस्तादे बुर्ज़गवार ये ख़ादिम के ही ज़ेहन की उपज है। इस्हाक ने कहा "ये मै हरगिज़ न मानूगा तुम लोग कहाँ और ये इअतिराज़ कहाँ! सच कहो ये किसने सिखाया है ? शार्गिद ने अर्ज़ की हुज़ूर सच तो ये है कि मुझे इमाम हसन अस्करी (अ०) ने बताया है। इस्हाक़ ने कहा अब तुम ढ़र्रे पर आये हो। ये नुक्ते बस खाना ज़ादे नबूवत के ही बस के हैं। फिर उसने आग मंगवाई और जो लिखा पढ़ा था सब जलाकर ख़ाक कर दिया।

(हमारी तौहीद 1 जुलाई 1999 पेज न० 2 से)

●●●

रुबाई

देबले हिन्द मौलाना फ़रज़न्द हुसैन ज़ाख़िर इन्तेहादी

अहमद को जो अल्लाह ने शाही दे दी
हर चीज़ उन्हें ता महो माही दे दी
शक लाये जो एजाज़े नबी में काफ़िर
महताब ने दो होके गवाही दे दी

●●●

(बक़िया पेज न० 10 का,,,,,,,,,,,,,,,,,,,)

जिस बात से अनभिज्ञ होता है उसका दुश्मन हो जाता है।" इतने अच्छे ढंग से न सही मगर यह बात अंगेज़ी में भी कहीं गई। Fair of unknown वह डर जो किसी चीज़ के बारे में जानकारी न होने से पैदा होता है। खुली बात है कि "डर" दुश्मनी तक पहुँचा दिया करता है।

मैं पहले के अपने **"उलमा"** की सेवाओं और ज्ञान का क़द्रदां हूँ और रहूँगा। मगर इस क़द्रदानी के बावजूद मुझे पहले के आलिमों और मौजूदा आलिमों से यह गिला अवश्य है कि वह समस्या पर तब विचार करते हैं जब वह सम्मुख आकर खड़ी हो जाती है और चारों ओर से घेर लेती है। काम ऐसे नहीं चलेगा। समस्या आने से पहले उसके **मुज़मरात** (निहितार्थ) पर विचार कर लेना चाहिए और उसका निदान सोच लेना चाहिये। समस्या फट पड़ती है तो फ़ैसले चिन्तन से नहीं घबराहट से होते हैं।

बहरहाल साइंस का युग शुरू हुआ तो उस वक़्त के आलिम साइंस से अनभिज्ञ थे इसलिए उसके विरोधी हो गये। और साइंस एवं आधुनिक ज्ञान के विरूद्ध फ़त्वे छप गये। इसका भुगतान हमारा समुदाय अभी तक भुगत रहा है। सब आगे निकल गये हम पीछे रह गये।

मगर जो ग़ल्ती उस वक़्त के दीनी आलिमों ने की थी वहीं आजकल के साइंसदां कर रहे हैं। वह साइंस से अपरिचित थे उन्होंने साइंस को धर्म का दुश्मन माना। यह मज़हब से अनभिज्ञ हैं इसलिए यह धर्म को साइंस विरोधी मानते हैं। हालाँकि न धर्म साइंस विरोधी है न साइंस धर्म विरोधी। यह एक दूसरे की पूर्ति करते हैं। यह दोनों मिल के जीवन में सन्तुलन बनाते हैं। सभ्यता और सांस्कृति की तेज़ रफतार गाड़ी में साइंस की हैसियत एक्सीलेटर और पहियों की है जिससे गाड़ी में गति आती है। मज़हब की हैसीयत ब्रेक और स्टियरिंग व्हील की है जिनके माध्यम से दुर्घटनाओं से बचा जाता है और सही दिशा में यात्रा होती है। साइंस न होगी तो हम सिकुड़ जायेंगे, मज़हब न रहा तो हम फट जायेंगे।

●●●